गुवाहाटी-असम। राज्यपाल महोदय जगदीश मुखी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शीला व ब्र.कु. पाखिली।

पटना-बिहार। राज्यपाल महोदय लालजी टंडन को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह देते हुए ब्र.कु. संगीता।

जयपुर-राजापार्क। विधानसभा स्पीकर कैलाश चन्द्र मेघवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। सर्वोदय कन्या विद्यालय के शिक्षकों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. शशि तथा ब्र.कु. अन्जना।

जम्मू कश्मीर-वटोत। जज अरविन्द शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मल।

दिल्ली-आर.के. पुरम। साउथ दिल्ली म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के असिस्टेंट इंजीनियर मनीष हुरिआ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनीता।

मन, वचन, कर्म एक समान हों

- गतांक से आगे...

ओम शब्द में तीन अक्षर आते हैं। अ, ऊ, म - अ माना आचरण, ऊ- माना उच्चारण, म - माना मन के विचार। तो आचरण, उच्चारण और मन के विचार। मन, वचन और कर्म हमारी शक्तियाँ हैं। ये तीन निवास स्थान में ही रहते हैं। उसी के सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव और दृढ़ भाव को समा लो, तो हमारे मन के संकल्पों में भी वो दृढ़ता आ जायेगी। हमारी वाणी में भी वो शक्ति आ जायेगी। हमारे आचरण में भी श्रेष्ठता स्वत: आ जाएगी। इसीलिए कहा अ, ऊ, और म। लेकिन आज ये तीनों अलग-अलग दिशाओं में चल रहे हैं। कभी-कभी मन में बहुत सुंदर विचार आते हैं। लेकिन जब व्यक्त करने जाते हैं तो कुछ और ही निकल आता है। फिर बाद में हमें माफी मांगनी पड़ती है कि प्लीज़ आप मेरे मन के भाव को समझने का प्रयत्न करना, मेरे शब्दों की तरफ ध्यान नहीं देना। अर्थात् स्पष्ट शब्दों में हम कहना चाहते हैं कि मेरे मन के भाव कुछ और हैं, मेरी वाणी कुछ और है। दोनों में तालमेल नहीं है। इसलिए प्लीज़ हमें गलत मत समझना। जहाँ तक हमने सॉरी कह दिया, वहाँ तक तो ठीक है। लेकिन जहाँ वो व्यक्ति चला गया, उसके बाद महसूस हुआ कि मैंने जो कुछ भी कहा वो बहुत बड़ी मिसअंडरस्टैडिंग को क्रियेट करेगा। तो कितना टेंशन होने लगता है!

भावार्थ ये है कि मनुष्य अपनी शांति को नष्ट कैसे करते हैं, जब उसके मन के विचार उसके वाणी के साथ तालमेल नहीं रख रहे हैं। अर्थात् सुसंवादिता में नहीं चल रहे हैं, हारमनी में नहीं हैं, तब टेंशन क्रियेट होता है। उसके बाद जब कर्म में आओ तो कर्म में कुछ और ही हो जाता है। फिर कहते हैं, पता नहीं सोचा भी नहीं था, ये कैसे हो गया? अर्थात् स्पष्ट है कि सोचा कुछ और है, बोला कुछ और है, किया कुछ और है। जब ये तीनों में हारमनी नहीं रही तो जीवन की गाड़ी का क्या हाल होगा! इसलिए जीवन में अगर सुख, शांति और आनंद को प्राप्त करना चाहते हैं या अनुभव करना चाहते हैं तो इन तीनों को एक करने की आवश्यकता है। जो हमारे मन के विचार हों, वही हमारी वाणी हो और वही हमारे कर्म में हो, वही हमारा आचरण हो। जब तीनों में हारमनी आने लगती है, तब हमारा जीवन सुसंस्कृत होने लगता है, श्रेष्ठ बनने लगता है। इस तरह हम अपने संस्कारों को श्रेष्ठ बनाते जाते हैं। जीवन को एक दिशा मिलने लगती है, जो श्रेष्ठता की ओर जाती है। आज मनुष्य में सबसे बड़ी कमज़ोरी आ गई है कि विचार अलग दिशा में भाग रहे हैं, वाणी कुछ और निकलती जा रही है जिसपर कोई कंट्रोल नहीं है। बाद में पश्चाताप करना पड़ता है और आचरण कुछ और ही होता है। जो मनुष्य बोलता है वो कर नहीं पाता है, जो सोचता है वह बोल नहीं पाता है। ये तो आज की सबसे बड़ी समस्या हो गयी है। इस कारण से जीवन में हताशा बढ़ती जाती है।

- क्रमश:

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया, संपादक,
ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.) -307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

यह जीवन है...

जिस क्षण आपको इस बात का स्मरण आता है कि जीवन का यह महा-अवसर ऐसे ही खोया जाता है, यहाँ बहुत कुछ हो सकता था, और कुछ भी नहीं हो रहा है, **आप खाली हाथ आए और खाली हाथ ही चले जायेंगे।** अगर आप आज भी जाग जाएं, आप पार लग सकते हैं। उस किनारे का मन में थोड़ा भी स्वप्न जग जाए, तो फिर यह किनारा आपको ज़्यादा देर बांधे नहीं रख पायेगा। इस किनारे से आपकी जंजीरें टूटनी शुरू हो जाएंगी।

ख्यालों के आईने में...

सफलता?

दूर से हमें आगे के सभी रास्ते बंद नज़र आते हैं, क्योंकि सफलता के रास्ते हमारे लिए तभी खुलते हैं, जब हम उसके बिल्कुल करीब पहुँच जाते हैं।

समय?

आप यह नहीं कह सकते कि आपके पास समय नहीं है, क्योंकि आपको भी दिन में उतना ही समय (24 घंटा) मिलता है, जितना समय महान एवं सफल लोगों को मिलता है। समय सभी को एक समान ही मिलता है।